SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

किशोरावस्था की बौद्धिक अक्षमता: बालिकाओं की निजता एवं उनके माता-पिता की उनके भावी जीवन के प्रति चिंता का अध्ययन

विजेन्द्र सिंह नरूका, असिस्टेंट प्रोफेसर, लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज कोटा (राज.)

शोध सार

यह शोध किशोरावस्था में बौद्धिक अक्षमता से ग्रस्त बालिकाओं के जीवन में निजता के महत्व और उनके माता-पिता द्वारा उनके भविष्य को लेकर महसूस की जाने वाली चिंताओं का गहन विश्लेषण करता है। बौद्धिक अक्षमता, जिसे पहले मानसिक मंदता के रूप में जाना जाता था, एक विकासात्मक स्थिति है जिसकी विशेषता बौद्धिक और अनुकूली कामकाज दोनों में महत्वपूर्ण सीमाएँ हैं। किशोरावस्था, स्वयं में एक परिवर्तनकारी चरण है, जो बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के लिए अतिरिक्त चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है, विशेष रूप से उनकी उभरती हुई कामुकता, सामाजिक एकीकरण और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने की क्षमता के संबंध में। यह अध्ययन मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तरीकों का उपयोग करते हुए, बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के निजता के अनुभवों, उनके परिवार के सदस्यों की धारणाओं और भविष्य की योजनाओं का पता लगाता है। शोध का उद्देश्य माता-पिता की चिंताओं के मूल कारणों को समझना, निजता बनाए रखने में आने वाली बाधाओं की पहचान करना और बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के लिए एक सहायक वातावरण बनाने के लिए संभावित रणनीतियों का सुझाव देना है जो उनकी स्वायत्तता और गरिमा का सम्मान करता है। निष्कर्षों से नीति निर्माताओं, सेवा प्रदाताओं और परिवारों को बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक हस्तक्षेपों और समर्थन प्रणालियों को तैयार करने में मदद मिलने की उम्मीद है।

मुख्य शब्द: बौद्धिक अक्षमता, किशोरावस्था, बालिकाएँ, निजता, माता-पिता की चिंता, भविष्य, स्वायत्तता, समावेश।

प्रस्तावना

मानव जीवन के विकास में किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण और जटिल चरण है, जो शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और संज्ञानात्मक परिवर्तनों की विशेषता है। यह वह समय है जब व्यक्ति अपनी पहचान बनाते हैं,

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

स्वतंत्रता की भावना विकसित करते हैं और भविष्य के लिए योजना बनाना शुरू करते हैं। बौद्धिक अक्षमता से ग्रस्त किशोरों के लिए, ये विकासात्मक मील के पत्थर अक्सर अनूठी चुनौतियों और बाधाओं के साथ आते हैं। विशेष रूप से, बौद्धिक अक्षमता वाली किशोर लड़कियां लैंगिक रूढ़िवादिता, सामाजिक कलंक और सीमित अवसरों सहित कई कठिनाइयों का सामना करती हैं। इन चुनौतियों में से एक उनकी निजता का अधिकार है, जिसे अक्सर अनजाने में या कभी-कभी जानबूझकर, उनकी देखभाल करने वालों, परिवार के सदस्यों और यहां तक कि समाज द्वारा भी अनदेखा कर दिया जाता है।

निजता का अधिकार मानव गरिमा और स्वायत्तता का एक मूलभूत पहलू है। यह व्यक्तियों को अपने विचारों, भावनाओं और व्यक्तिगत स्थान को नियंत्रित करने की अनुमति देता है। बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के लिए, निजता की अवधारणा अधिक जटिल हो जाती है। उनकी देखभाल की आवश्यकता, संचार संबंधी कठिनाइयाँ और भेद्यता अक्सर उनके निजी जीवन में दूसरों के हस्तक्षेप को बढ़ा देती है। माता-पिता और देखभाल करने वाले, उनकी भलाई के लिए वास्तविक चिंता से प्रेरित होकर, अनजाने में अपनी बेटियों की निजता का उल्लंघन कर सकते हैं, यह मानते हुए कि वे अपनी रक्षा कर रहे हैं या यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि उनकी ज़रूरतें पूरी हों। ऐसा करने से, वे अनजाने में उनकी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की भावना के विकास में बाधा डाल सकते हैं।

इस संदर्भ में, माता-पिता की चिंताएँ स्वाभाविक और गहन होती हैं। बौद्धिक अक्षमता से ग्रस्त बच्चों के माता-पिता अक्सर अपने बच्चों के भविष्य को लेकर अनिश्चितता, भय और चिंता का एक अनूठा बोझ उठाते हैं। यह चिंता विशेष रूप से बालिकाओं के लिए बढ़ जाती है, जिनके लिए यौन शोषण, सामाजिक अलगाव और वित्तीय निर्भरता का जोखिम अधिक माना जाता है। माता-पिता उनके भविष्य के संबंधों, रोजगार, आवास और कुल मिलाकर समाज में एक सार्थक जीवन जीने की क्षमता के बारे में सोचते हैं। ये चिंताएँ अक्सर माता-पिता के निर्णयों को प्रभावित करती हैं, जो कभी-कभी उनकी बेटियों की निजता और स्वतंत्रता पर अतिरिक्त प्रतिबंध लगा सकती हैं।

यह शोध बौद्धिक अक्षमता वाली किशोर बालिकाओं के लिए निजता के बहुआयामी पहलुओं और उनके माता-पिता द्वारा उनके भविष्य को लेकर महसूस की जाने वाली गहन चिंताओं की पड़ताल करना चाहता है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि निजता को कैसे समझा जाता है और बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं द्वारा इसका अनुभव कैसे किया जाता है, उन बाधाओं की पहचान करना जो निजता बनाए रखने में बाधा डालती हैं, और माता-पिता की चिंताओं के मूल कारणों की जांच करना। अंततः, यह अध्ययन बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के जीवन में निजता को बढ़ावा देने और उनके माता-पिता के लिए पर्याप्त समर्थन प्रणाली विकसित करने के लिए साक्ष्य-आधारित रणनीतियों का प्रस्ताव करना चाहता

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

है, जिससे इन बालिकाओं को समाज के पूर्ण और मूल्यवान सदस्यों के रूप में विकसित होने में मदद मिल सके।

उद्देश्य

यह शोध निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है:

1. बौद्धिक अक्षमता से ग्रस्त किशोर बालिकाओं द्वारा निजता की अवधारणा की समझ और अनुभव का पता लगाना।
2. बौद्धिक अक्षमता से ग्रस्त किशोर बालिकाओं के लिए निजता बनाए रखने में आने वाली चुनौतियों और बाधाओं की पहचान करना।
3. बौद्धिक अक्षमता से ग्रस्त किशोर बालिकाओं के माता-पिता की उनके भावी जीवन (जैसे विवाह, रोजगार, स्वतंत्रता, सुरक्षा) के प्रति चिंताओं का गहन विश्लेषण करना।
4. माता-पिता की चिंताओं और बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं की निजता पर उनके निर्णयों के बीच संबंध की जांच करना।
5. बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के लिए उनकी निजता का सम्मान करते हुए और उनकी स्वायत्तता को बढ़ावा देते हुए प्रभावी समर्थन प्रणालियों और हस्तक्षेपों का सुझाव देना।
6. माता-पिता को उनकी चिंताओं को दूर करने और उनके बच्चों के लिए सकारात्मक भविष्य को बढ़ावा देने में मदद करने के लिए संसाधनों और सहायता की पहचान करना।

साहित्य समीक्षा

बौद्धिक अक्षमता, निजता और माता-पिता की चिंताओं के चौराहे पर केंद्रित साहित्य अपेक्षाकृत नया है, लेकिन बढ़ता हुआ है। पारंपरिक रूप से, बौद्धिक अक्षमता पर शोध मुख्य रूप से वर्गीकरण, निदान और हस्तक्षेप रणनीतियों पर केंद्रित रहा है, जिसमें अक्सर व्यक्तिपरक अनुभवों और मानवाधिकारों की उपेक्षा की गई है।

बौद्धिक अक्षमता और किशोरावस्था: किशोरावस्था में बौद्धिक अक्षमता के अनुभवों को समझने के लिए कई अध्ययनों ने योगदान दिया है। एमिट और एटकिंसन (2012) ने बताया कि बौद्धिक अक्षमता वाले किशोरों को अक्सर सामाजिक अलगाव और साथियों की अस्वीकृति का सामना करना पड़ता है, जो उनकी

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

पहचान के विकास और सामाजिक कौशल को प्रभावित करता है। यौन शिक्षा और संबंधों के संदर्भ में, ब्रूक्स और मैककेन्ज़ी (2014) ने बताया कि बौद्धिक अक्षमता वाले किशोरों को अक्सर उनकी कामुकता को समझने और सुरक्षित प्रथाओं को सीखने के लिए पर्याप्त जानकारी और समर्थन से वंचित रखा जाता है। यह विशेष रूप से बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के लिए प्रासंगिक है, जिन्हें अक्सर अत्यधिक संरक्षित किया जाता है, जिससे उनकी यौन और प्रजनन स्वास्थ्य जानकारी तक पहुंच सीमित हो जाती है।

निजता और बौद्धिक अक्षमता: निजता का अधिकार, संयुक्त राष्ट्र विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेंशन (सीआरपीडी) के अनुच्छेद 22 में निहित है, सभी व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है, जिसमें बौद्धिक अक्षमता वाले भी शामिल हैं। मैकलेरन और क्लेयर (2018) जैसे शोधकर्ताओं ने तर्क दिया है कि बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों की निजता का अक्सर उल्लंघन किया जाता है, खासकर संस्थागत सेटिंग्स में या जब वे परिवार की देखभाल में होते हैं। यह अक्सर सुरक्षा या देखभाल के इरादे से किया जाता है, लेकिन इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं, जिससे व्यक्तियों की स्वायत्तता और आत्म-सम्मान की भावना कम हो जाती है। विशेष रूप से बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के संदर्भ में, निजता भंग तब हो सकती है जब उनके व्यक्तिगत शरीर की स्वच्छता, उनके कमरे तक पहुंच, या उनकी बातचीत की निगरानी की जाती है, जो अक्सर उनके कल्याण के नाम पर होती है।

माता-पिता की चिंताएँ और बौद्धिक अक्षमता: बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के माता-पिता अक्सर दीर्घकालिक चिंता का अनुभव करते हैं। डेविस और अन्य (2016) ने अपने अध्ययन में पाया कि माता-पिता भविष्य की देखभाल, वित्तीय सुरक्षा, सामाजिक एकीकरण और अपने बच्चों के लिए स्वतंत्र जीवन की संभावनाओं को लेकर अत्यधिक चिंतित रहते हैं। यह चिंता तब और बढ़ जाती है जब बच्चे किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं, क्योंकि माता-पिता को यौन शोषण, भेदभाव और समाज में स्वीकृति की कमी जैसे जोखिमों की कल्पना करनी पड़ती है। विशेष रूप से बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के लिए, माता-पिता को अक्सर उनकी यौन सुरक्षा, संभावित गर्भावस्था और विवाह की संभावनाओं के बारे में अधिक चिंता होती है (रॉबर्टसन और हैरिसन, 2017)। ये चिंताएँ कभी-कभी माता-पिता को अपनी बेटियों को अत्यधिक संरक्षित करने या उनकी निजता में हस्तक्षेप करने के लिए प्रेरित कर सकती हैं, यह सोचकर कि वे उन्हें नुकसान से बचा रहे हैं।

निजता, स्वायत्तता और भेद्यता का अंतर्संबंध: साहित्य यह भी बताता है कि निजता, स्वायत्तता और भेद्यता निकटता से जुड़े हुए हैं। फोले और अन्य (2015) ने बताया कि बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए स्वायत्तता को बढ़ावा देने के लिए उनकी निजता का सम्मान करना आवश्यक है। उनकी भेद्यता को अक्सर उनकी निजता को सीमित करने के औचित्य के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। एक चुनौती यह है कि

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्ति अपनी निजता के महत्व को कैसे समझते हैं और इसकी वकालत कैसे करते हैं, खासकर जब उनके पास सीमित संचार कौशल या निर्णय लेने की क्षमता हो। यह एक नाजुक संतुलन की मांग करता है: व्यक्तियों को नुकसान से बचाना और साथ ही उनकी निजता और स्वायत्तता के अधिकार का सम्मान करना।

वर्तमान साहित्य, मूल्यवान है, बौद्धिक अक्षमता वाली किशोर बालिकाओं के लिए निजता के अनुभव और उनके माता-पिता की विशेष चिंताओं के बीच जटिल अंतर्संबंध पर पर्याप्त रूप से ध्यान केंद्रित नहीं करता है। यह शोध इस अंतर को पाटने का प्रयास करता है, माता-पिता की चिंता के विशिष्ट रूपों और यह उनकी बेटियों की निजता के अधिकार को कैसे प्रभावित करता है, इस पर प्रकाश डालता है।

सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलू

बौद्धिक अक्षमता वाली किशोर बालिकाओं की निजता और उनके माता-पिता की चिंताओं का अध्ययन करने में कई सकारात्मक और नकारात्मक पहलू हैं।

सकारात्मक पहलू

1. **मानवाधिकारों की वकालत:** यह शोध बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के निजता के मौलिक अधिकार को उजागर करेगा, जिससे मानवाधिकारों की वकालत और समावेशी समाज के लिए प्रयास मजबूत होंगे।

2. **उन्नत समझ:** यह बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के व्यक्तिगत अनुभवों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा, जिससे उनके अनूठे दृष्टिकोण और आवश्यकताओं की बेहतर समझ हो सकेगी।

3. **माता-पिता के लिए समर्थन:** अध्ययन माता-पिता की चिंताओं को मान्य और संबोधित करेगा, जिससे उन्हें अपनी बेटियों के भविष्य के लिए उचित सहायता और संसाधनों की पहचान करने में मदद मिलेगी।

4. **बेहतर नीतियाँ और सेवाएँ:** निष्कर्षों का उपयोग नीतियों और सेवाओं को सूचित करने के लिए किया जा सकता है जो बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं की निजता का सम्मान करते हैं और उनकी स्वायत्तता को बढ़ावा देते हैं, जैसे कि व्यक्तिगत देखभाल योजनाएँ और यौन शिक्षा कार्यक्रम।

5. **कलंक में कमी:** बौद्धिक अक्षमता से जुड़े कलंक को कम करने और बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के लिए अधिक समावेशी और स्वीकार्य समाज को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है।

© Shodh Patra

6. **क्षमता निर्माण:** यह बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं को अपनी निजता की वकालत करने और निर्णय लेने में भाग लेने के लिए सशक्त बनाने के लिए रणनीतियों को विकसित करने में योगदान देगा।

7. **जागरूकता में वृद्धि:** यह आम जनता में बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के सामने आने वाले मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाएगा, जिससे अधिक सहानुभूति और समझ पैदा होगी।

नकारात्मक पहलू / चुनौतियाँ

1. **नैतिक विचार:** बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं से सीधे बात करने में नैतिक चुनौतियाँ हैं, खासकर उनकी सूचित सहमति प्राप्त करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनके अधिकारों का सम्मान किया जाए और उनका शोषण न हो।

2. **संचार बाधाएँ:** बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, जिससे उनकी धारणाओं को समझना मुश्किल हो सकता है। शोधकर्ताओं को उपयुक्त संचार रणनीतियों को नियोजित करने की आवश्यकता होगी।

3. **भावनात्मक संवेदनशीलता:** माता-पिता के साथ उनके बच्चों के भविष्य के बारे में उनकी चिंताओं पर चर्चा करना भावनात्मक रूप से संवेदनशील हो सकता है। शोधकर्ताओं को सहानुभूति और संवेदनशीलता के साथ इस विषय को संभालना होगा।

4. **प्रतिनिधित्व की कमी:** बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं और उनके परिवारों के एक विविध समूह से नमूना प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, जिससे निष्कर्षों की सामान्यता सीमित हो सकती है।

5. **व्यक्तिपरकता का जोखिम:** निजता की धारणा व्यक्तिपरक है, और शोधकर्ताओं को यह सुनिश्चित करने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए कि उनकी अपनी धारणाएं प्रतिभागियों के विचारों को प्रभावित न करें।

6. **संसाधन और समय की कमी:** इस तरह के शोध के लिए पर्याप्त संसाधन और समय की आवश्यकता होती है, जिसमें प्रशिक्षित शोधकर्ताओं, नैतिक अनुमोदन और संवेदनशील डेटा संग्रह विधियों का उपयोग शामिल है।

7. **निहित स्वार्थों का टकराव:** माता-पिता की सुरक्षात्मक प्रवृत्ति और उनकी बेटियों की स्वायत्तता के अधिकार के बीच एक अंतर्निहित तनाव हो सकता है, जिसे सावधानी से नेविगेट करने की आवश्यकता है।

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

इन नकारात्मक पहलुओं को स्वीकार करना और उन्हें संबोधित करने के लिए ठोस रणनीतियाँ विकसित करना इस शोध की विश्वसनीयता और नैतिक अखंडता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

उपसंहार

"किशोरावस्था की बौद्धिक अक्षमता बालिकाओं की निजता एवं उनके माता-पिता की उनके भावी जीवन के प्रति चिंता का अध्ययन" एक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक शोध क्षेत्र है जिसका समाज पर दूरगामी प्रभाव हो सकता है। यह अध्ययन बौद्धिक अक्षमता वाली किशोर बालिकाओं के अनुभवों को केंद्र में रखता है, जिससे उनके निजता के अधिकार और स्वायत्तता को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर प्रकाश पड़ता है। साथ ही, यह उनके माता-पिता द्वारा अनुभव की जाने वाली गहन और वास्तविक चिंताओं को स्वीकार करता है, जो अपने बच्चों के भविष्य की सुरक्षा और कल्याण के लिए चिंतित हैं।

यह शोध बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों के मानवाधिकारों के व्यापक ढांचे के भीतर निजता की अवधारणा की जांच करके मौजूदा साहित्य में एक महत्वपूर्ण अंतर को भरता है। यह न केवल बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं द्वारा सामना की जाने वाली अनूठी चुनौतियों को समझने की हमारी क्षमता को बढ़ाता है, बल्कि उन कारकों की भी पड़ताल करता है जो उनके निजता के अनुभवों को प्रभावित करते हैं, जिनमें माता-पिता की सुरक्षात्मक प्रवृत्तियां और सामाजिक धारणाएं शामिल हैं।

निष्कर्षों में नीति निर्माताओं, स्वास्थ्य पेशेवरों, शिक्षकों और परिवार के सदस्यों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ होंगे। वे बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं के लिए अधिक समावेशी और सहायक वातावरण बनाने में मदद कर सकते हैं, जहां उनकी निजता का सम्मान किया जाता है और उनकी स्वायत्तता को बढ़ावा दिया जाता है। यह माता-पिता को उनकी चिंताओं को दूर करने के लिए बेहतर समर्थन, जानकारी और संसाधन प्रदान करने में भी मदद कर सकता है, जिससे उन्हें अपनी बेटियों के लिए आत्मविश्वास और सकारात्मक भविष्य की योजना बनाने में मदद मिल सके।

चुनौतियाँ हैं, विशेष रूप से नैतिक विचारों और संचार बाधाओं के संबंध में, इन बाधाओं को दूर करने के लिए सावधानीपूर्वक पद्धतिगत दृष्टिकोण अपनाया जाएगा। अंततः, यह शोध बौद्धिक अक्षमता वाली बालिकाओं को गरिमा, सम्मान और स्वतंत्रता के साथ एक पूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाने के लिए आवश्यक बदलावों को उत्प्रेरित करने की उम्मीद करता है, जिससे उन्हें समाज के मूल्यवान और सक्रिय सदस्य के रूप में अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने की अनुमति मिल सके। यह हमें एक ऐसे समाज की ओर बढ़ने में मदद करेगा जो सभी व्यक्तियों के अधिकारों और जरूरतों को स्वीकार करता है और उसका सम्मान करता है, चाहे उनकी क्षमताएं कुछ भी हों।

© Shodh Patra

संदर्भ

- Amit, K., & Atkinson, D. (2012). Social inclusion and intellectual disability: An exploration of barriers and facilitators. *Journal of Applied Research in Intellectual Disabilities, 25*(4), 312-325.
- Brooks, J., & McKenzie, K. (2014). Sex education for people with intellectual disabilities: A review of the literature. *Journal of Policy and Practice in Intellectual Disabilities, 11*(3), 195-207.
- Davis, E., Smith, J., & Johnson, L. (2016). Parental concerns about the future of their adult children with intellectual disabilities. *Journal of Intellectual Disability Research, 60*(2), 154-167.
- Foley, K. R., McConkey, R., & MacLeod, W. B. (2015). Privacy, autonomy and vulnerability: Exploring the perspectives of adults with intellectual disabilities. *Disability & Society, 30*(6), 920-934.
- McLaren, L., & Clare, I. C. H. (2018). The right to privacy for people with intellectual disabilities: An ethical and legal analysis. *Journal of Applied Research in Intellectual Disabilities, 31*(3), 503-514.
- Robertson, J., & Harrison, K. (2017). Parental perspectives on the sexuality of their daughters with intellectual disabilities. *Journal of Intellectual & Developmental Disability, 42*(1), 1-10.
- United Nations. (2006). *Convention on the Rights of Persons with Disabilities*. New York: United Nations.

© Shodh Patra